सूर्यकामंत्र

नं. ९३२

ॐश्रीस्वर्गायनमः॥ दोहा॥ ॐप्रतिग्रच
रजमनकुसलवैसेनाहैधग्रपार॥
किंजीतैगेःनइतैमनमहकारतावि
चार॥१॥ ॥चौपाई॥ सैताहैधीमहवि
माला॥ तेराधर्मईविसमैसेराअवाला

सु॰
१

कारतविचारतहामिलदोऊ॥ विजे-
हीकीजेक्रतसोऊ॥१४देवतासुथि-
थ्रायाथाहै॥कीरिप्रसननकाराजसभ-
साथाहै॥महातेजसिएस्यवीपाला
सिमरीहैइहमनताकोननकाला॥१५

देवविनुसिधिनहोई॥ कोटिउपाइक
रहेंमतोई। मनवचकर्मउदमयह॰
कीह्नो॥ प्रथमेसरमजनकीदीनो॥
दोहा॥ मंजनकरितनमलविकोउ॰
सेंध्यानसमरनकोन॥ रविसनमुषक

म्.
२

2

स्नोगिकेवाढह्रोवेमतदोत् ॥२॥
चौपाई ॥ जाप्रमतनृराजकाकोनो
प्रथमैंनृमस्कारकेरलीनो ॥ अम
नृतकरीअनेकप्रकारा ॥ नमहो
रविजगाकाकरतारा ॥ महापतो

पवानकसपसतनु॥ हहैकरतनतेज
सीमहाउतु॥ हमराहैप्रणामतुम
कोसब॥ सिउकरोकाजहमके:
सब॥ तुमप्रतिपालकसकलज
गनको। मनवांछनफलदेतभग

सू॰
३

3

तिनकों॥ दृष्टिवोजोजनकोटिप
चासा॥ जहांतहांतममहाप्रकास
दोहा॥ सहसकिरणनभमैरविबे॰
सदाआनंदतभाई॥ जोतमक्रोध॰
कोटिदासभगैघटजोराजाई ॥५॥

चौपई ॥ तुम ही हो सभ१ थवीपाल
कृपारूपवौतेजौवसाल ॥ तुमको
जानतसमरायसकलविधि ॥ कोउप
णामकरोहमरीसिधि ॥ जैसेमन
साकरिकोइयिग्रावात ॥ सोतुमप

स्तु:
४

इवांछतफलपावत॥ ब्रह्माविस्नम
हेस्यआराधत॥ इंद्रादिकजपतप
करिसाधत॥ किंनरगणगंधर्वदेव
नर॥ सभसेवनतेकहाहोइभाओधर॥
जोतुमकरनजगप्रकासा॥ सक

लगैबधीहोईविनासा ॥ ८ ॥ दोहा ॥ श्रे
पकारहोवैहैनगरमाहेकञ्चनमं
कैसैन ॥ पृथवीकाआधारतुमसरूपा
तुमसबदैन ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ सहसकै
नतमरेमुखमाहो ॥ तुमसमसारथोश्रव

स्त्र॰
५

रकोऊनाही। तमेरेनामअनंतअपा
रा॥ तिमेरेहीनतासिथिजैकसा॥ अप
मेतरजनामनमाया॥ ताकोमदाप
लामहमाया॥ क्रोतिश्रादितनामन
मजाना॥ देतमनाजिनवांछातेदान

जोनरमदाटिवाकरसेवहि॥ उत्रदान
नाहीछिनलेवहि॥ मेहतूकरनिभा
मकरिष्यावहि॥ सत्रमित्रज्ञाहिजस
पावहि॥ ८॥ दोहा॥ सिवताकोसिम-
रनकोईहृदयदावकोहाईपविही

सू॰ ६

कोंछ्रायहीप्रीतमछपावहिसो॰ ९
चौपाई॥ श्रवनतामकसपकलते
रो।। तिमहिविजैकोराज़समेरो॥
भानुनामतमाराजसवंता॥ जोत
रप्याइहोइ आपिवंता॥ कृतसह

6

हमघतानामत्रमारा॥ सेवनमंगाल·
विविधिप्रकारा॥ दिनमणिनामग
रघजोसेवहि॥ सघपावहिकोरत
जमलेवहि॥ पृथवीपालनामत
रूख्यावहि॥ जोतहोसेमाणइघमभजा

सू:
८

वंदि॥ नमो तांम अनंत अपारा॥ द्वाद
स कैहै प्रगट संसारा॥१०॥ दोहा॥ न
मो द्वादस नाम इह पठै सुनै नर को-
इ॥ मनवांछत फल पावई सिद्धि मं-
नोरथ होइ॥११॥ चौपाई॥ १ अथ ध्यान

मैत्रिकिकोई। नाकेग्रहसंततनव·
हेरै॥ यतश्र्योततांछिनधनस्रावै
भजैभोगारहतनहरष्ट्रजावै॥ जेयष्ट
पैजोतनकेष्यावै॥ विजेहोमतिसज
सवद्रावै॥ जिहजेसोमनसाकरि·

मृ: ८ पायो॥ सो तुम तें बांछत फल पायो

8 जो तुम सरण श्रायो उनको॥ दी

जै दान विजै रण मुकत को॥ नमस्का

र तुम को हम कीनो॥ तुम श्रंतरजा

मी सम भावि पचीनो॥१२॥ दोहा॥ जो स

नमिकौनौकुसलवसुनितांविभीक्रि
पाल ॥ दिनमणिसुतरामवंतइवैचालि
आंईयोततकाल ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ भणप्र
सेनववचनभाषैरवि ॥ मांगाइसोवे:
रदेगकुसलव ॥ हाथजोइवोलैदा

स्तः
९

कभ्राता। यहहमदेह्रकाहकमला
ना। सेपतमघाणसोहमदीजे। श्रा
सुधदेहकपावबकोजे॥ एषमदे
हवावेजेहरोति॥ कारहप्रासीम
हनमरदलगाते॥ ममममघाण

सराजमंगायो । कुसलवकोजिह्रप
रवैलायो ॥ वलदीयोसमांगाकृपाक
र ॥ सातवानदीपैफलमहावरा ॥ ४ ॥
दोहा ॥ पृथमनामसरकेकेहादीय
कृपाकराहरा । वड्डदीयोरायसमव

सू
१०
10

षलवकुसमकोप्रगणसूर ॥ ५ ॥ चौपाई
श्रगानिवानजलवानदोयोक्रति ॥
तीनेषटूदोयातीछनशति ॥ मह
सलवानजवदोतो ॥ मिलावानदे
समडषछेतो ॥ ममलवानदोयाव

इहोयावै। अतिप्रतापकाहिसकेत
नहीकावै॥ पवनवानदीनोरिते
मणजव। भएप्रसनहीपकूसल
वनव। सातवानदेसोआसतनके
करौत्रसौसांवजेहीईरतमो ॥

ह्र:
॥

स्वर्गलोकफनिलोकपताला ॥
तममममामृजेकोऊभपाला ॥ १८
दोहा ॥ हरजग्रंतरध्यानभयो ॥ गा
योमोनिजधाम ॥ ख्यचाइलवऊ
ममममचगाहिचलेकरनेसंग्राम ॥

इतिश्रीभारथपरवोतेअश्वमेधपव
षान॥ मेश्रनुध्याऊछतोममोक
वटहकनजीअजान॥१॥ इतिश्री
सूर्यकामंत्रलवकुसमंसंपूर्णम् ॥

१४८

